शान्तिदूत बन सर्व को शान्ति की अनुभूति कराओ

आज बापदादा के पास अपनी प्यारी दादी जानकी जी का समाचार लेकर गई। मधुर मिलन मनाने के बाद मैंने समाचार सुनाया। सुनते ही बापदादा जैसे विश्व की सर्व आत्माओं को सकाश देने में बिजी हो गये। मैं भी देखती रही, कुछ समय के बाद बाबा बोले – बाप बच्चों के ऊपर बहुत-बहुत खुश हैं, जो बैरूत जाने का प्रोग्राम बनाया है। ऐसे कहते ही बाबा के सामने यह त्रिमूर्ति सेवाधारी दादी जानकी जी, जयन्ती, गायत्री और सर्व साथी इमर्ज थे और बाबा बहुत पावरफुल और बहुत स्नेह भरी नज़र से निहाल कर रहे थे। इसके बाद बाबा बोले – देखो ड्रामा अनुसार बच्चों के दिल में बाप को सर्व आत्माओं, सर्व धर्मों के पिता के रूप में प्रत्यक्ष करने का उमंग बहुत अच्छा है क्योंकि हर धर्म की आत्मा को बाप का सन्देश तो मिलना ही है। कोई धर्म भी वंचित नहीं रहना चाहिए। निमन्त्रण अच्छा है, जाना ही है सिर्फ त्रिकालदर्शी बन ऐसे शब्दों में मॉरल एज्युकेशन को लेकर ही बोलना, मिलना है, सम्पर्क में लाना है, आगे बढ़ाना है। कोई भी रूप में यह हिन्दू धर्म के हैं वा अपना प्रचार करने आये हैं - यह फीलिंग नहीं आनी चाहिए। लेकिन यह सर्व आत्माओं के कल्याण करने वाले, शान्ति देने वाले **शान्तिदूत** हैं, ऐसे शान्ति दूत का अनुभव कराना है, यही लक्ष्य सेवा का है। बाकी सफलता तो बच्चों के गले का हार है ही।

बच्चों को बापदादा की याद और दिल का प्यार तो हर सेकण्ड हर श्वाँस साथ है ही। सर्व को बहुत प्यार, यह था बाबा का सन्देश।

ओम् शान्ति।